मासिक पत्रिका नवम्बर 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आत्म समर्पण

आत्म समर्पण जीवन का नियम तथा गुर-दोनों है। प्रत्येक व्यक्ति अपने को दूसरे के भरोसे छोड़ना चाहता है-यह सृष्टि का विधान है। हर व्यक्ति किसी दूसरे की अपेक्षा छोटा है और जिससे छोटा है उस पर निर्भर रहकर निश्चिन्त हो सकता है। स्वामी रामतीर्थ अमरीका चल पड़े, पास कुछ नहीं था। जब जहाज़ अमरीका के बन्दरगाह पर पहुँचा तब उनके साथ के यात्री ने पूछा-कुछ पता-ठिकाना है? कहाँ जाओगे, कहाँ रहोगे? रामतीर्थ ने उत्तर दिया-भगवान् के भरोसे जा रहा हूँ। उस यात्री ने रामतीर्थ का सारा बोझ अपने पर ले लिया। भगवान् के भरोसे छोड़ देने का अर्थ ज़बानी जमा-खर्च करना नहीं है। स्वामी राम ने जिस प्रकार अपने को भगवान् के भरोसे छोड़ा हुआ था, उस तरह जो अपना बोझ भगवान् के ऊपर छोड़ देते हैं उनका सारा बोझ भगवान् ले लेते हैं। कवि ने ठीक ही कहा है:

जब दाँत न थे तब दूध दियौ, जब दूध दियौ तब अन्न न दैहें?

जल में, थल में पसु-पच्छिन की जो सुधि लेत सो तोकोहु लैहैं॥

इन्सान यह भूल जाता है कि सृष्टि के चक्र को 'मैं' नहीं चला रहा, 'वह' चला रहा है। क्या हम अपने जीवन में नहीं देखते कि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं होता? कितना ही ज़ोर लगाऊँ मेरी इच्छा नहीं, उसकी इच्छा ही पूरी होती है। समय आता है जब हमें अपनी इच्छा को उसकी इच्छा के सामने झुका देना पड़ता है। संसार में महान्-से-महान् शक्तियाँ उठीं, परन्तु समय आया जब उनके मंसूबे मिट्टी में मिल गये। खेल उसी का है, हम सब उस खिलाड़ी के हाथों शतरंज के पाँसे हैं। संसार में अहंकारी लोग समझते हैं कि उनका हुक्म चलता है, परन्तु उन्हें भी वे दिन देखने पड़ते हैं जब उनका गुरूर टूट जाता है, उन्हें दीख जाता है कि वे गलत थे।

गीता में आत्म-समर्पण-गीता (१९-३४) में श्री कृष्ण ने अर्जुन को आत्म-समर्पण का उपदेश देते हुए कहा है:

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी माँ नमस्कुरु।

मामेवैष्यसि युक्त्वैवम् आत्मानं मत्परायणः॥

गीता में जो-कुछ कहा गया है, वह महर्षि वेदव्यास ने श्री कृष्ण के मुख से कहलवाया है। वेदव्यास ने श्री कृष्ण को भगवान् के स्थान में बैठाकर आत्म-समर्पण की बात कही है। गीता में कहा है कि श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि अपने मन को मुझमें स्थित कर! मेरा भक्त बन ! मेरी पूजा कर ! मुझे प्रणाम कर ! यह कथन व्यक्ति-रूप से श्री कृष्ण का नहीं जिसके प्रति हमने आत्म-समर्पण करना है; यह कथन उस अनादि अजन्मा पर ब्रह्म के लिये है-उसी के प्रति आत्म-समर्पण करने के लिये कहा गया है-मानो भगवान् ही श्री कृष्ण के मुँह से बोल रहा है। ठीक इस प्रकार जैसे महर्षि व्यास ने अपनी बात श्री कृष्ण के मुख से कहलवायी है। वेदव्यास ने भगवान् के अभिप्राय को श्री कृष्ण के मुख से कहलवाया है। वेदव्यास ने यह बात अपने नाम से न कहकर श्री कृष्ण के नाम से कह दी है। अभिप्राय यही है कि हम जो-कुछ करें भगवान् के नाम से करें, अपने हर काम को भगवान् के अर्पण कर दें क्योंकि सृष्टि का हर कार्य उसी की योजना का अंग है।

1893 में स्वामी विवेकान्द 'पर्लियामेंट ऑफ़ रिलिजन्स' में शिकागो गये। इस समारोह में भाग लेने का नियम था कि जो किसी प्रसिद्ध संस्था का प्रतिनिधि बनकर आया हो, वही भाग ले सकता था। स्वामी विवेकानन्द तो किसी संस्था की तरफ़ से

गये नहीं थे। वे तो कुछ उत्साही व्यक्तियों की सहायता से ही चल पड़े थे। वहाँ जाकर उन्हें मालूम हुआ कि वे 'पार्लियामेंट ऑफ़ रिलिजन्स' में भाग नहीं ले सकते। इस बीच उनके पास पैसा भी नहीं रहा था। ऐसी स्थिति में उनका एक देवी से परिचय हुआ जो उनकी विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें अपने घर ले गई। इस देवी ने उनका परिचय डॉ. राइट से कराया जो 'पार्लियामेंट ऑफ़ रिलिजन्स' के चेयरमैन को जानते थे। डॉ. राइट ने स्वामी विवेकानन्द को चेयरमैन के नाम एक पत्र दिया, जिसमें लिखा था कि स्वामी जी महाविद्वान् हैं, इन्हें सभा में बोलने का समय देने की कृपा करें। स्वामी विवेकानन्द ने प्रभु को धन्यवाद दिया जिसकी कृपा से उनका पार्लियामेंट में भाग लेने का रास्ता खुलता जा रहा था। वे उस पत्र को लेकर शिकागो पहुँचे। स्टेशन पर पहुँचने पर उन्हें घोर निराशा ने आ घेरा क्योंकि वे चेयरमैन का पता साथ नहीं लाये थे। जिस स्थान पर वे पहुँचे, वह जर्मन लोगों की बस्ती था, इसलिए उनकी बात भी कोई नहीं समझता था। अन्त में सब-कुछ भगवान् के भरोसे छोड़कर रेल के किनारे पड़े लकड़ी के एक डिब्बे में पड़कर वे सो गये। प्रात:काल हुआ, उठे, देखा कि वे शहर के लेकशोर ड्राइव में हैं जहाँ करोड़पतियों के घर बने हुए थे। भूख सता रही थी, खाने को कुछ था नहीं, वे घर-घर भोजन की भिक्षा के लिए चल पड़े। कपड़े मैले हो गए थे, चेहरा भी यात्रा के कारण म्लान पड़ गया था, लोग उन्हें दुत्कारने लगे। अन्त में हारकर भगवान् के हाथों अपने को छोड़कर वे सड़क के किनारे बैठ गये। इतने में क्या देखते हैं कि सामने के एक महल-सदृश भवन में से एक देवी निकली। वह आगे बढ़ी-पूछा, महाशय! ऐसा लगता है कि आप कष्ट में हो, क्या आप 'पार्लियामेंट ऑफ़ रिलिजन्स' में भाग लेने आये हो? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूँ? स्वामी विवेकानन्द ने अपनी मुसीबत की सारी कहानी सुना दी। वह देवी उन्हें अपने घर ले गई, उनकी पूरी देख-भाल की, उनको 'पार्लियामेंट ऑफ़ रिलिजन्स' के चेयरमैन से मिलाया और उसके दूसरे दिन भगवान् के प्रति आत्म-समर्पण करनेवाले स्वामी विवेकानन्द का नाम अमरीका के कोने-कोने में गूँज उठा। उस देवी का नाम मिसेज़ हेल था।

'मैं' को मिटा देना आत्म-समर्पण है-जब तक अहंकार, 'अस्मिता' ('अहम् अस्मि' को शास्त्रों में 'अस्मिता' कहा गया है), जब तक 'मैं' हूँ का भाव बना रहता है, तब तक आत्म-समर्पण की भावना का उदय नहीं होता। अणु जब तक सोचता रहे कि मैं भी कुछ हूँ, तब तक वह इस विशाल पृथिवी का हिस्सा नहीं रहता। अपनें मैं को खोकर ही अणु यह विशाल विश्व बन जाता है। पानी की बूंद जब तक सोचती रहे कि मैं भी कुछ हूँ, तब तक वह छोटी-सी बूँद ही बनी रहती है। बूँद जब अपने को खोकर समुद्र में जा डूबती है, तब वह बूँद न रहकर समुद्र हो जाती है; दीये की लौ जब तक दीये के साथ बनी रहती है, तब तक वह छोटी-सी बत्ती का प्रकाश ही कहलाती है। जब उस लौ का प्रकाश ज्योतिषां-ज्योति: सूर्य से जा मिलता है, तब वह अखिल ब्रह्माण्ड को प्रकाश देने लगती है। प्रेमी तथा प्रमिका जब एक-दूसरे में अपने को मिटा देते हैं, तभी प्रेम का आविर्भाव होता है; आत्मा जब परमात्मा के प्रति अपने को समर्पित कर देता है-'भगवन्! मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा' कह उठता है, अनायास जब मुख से 'दाई विल बी डन' (Thy will be done) निकल पड़ता है, तब यह आत्मा भगवान् के प्रेम में उसी की गोद में जा पहुँचता है।

फल भोगने में परतन्त्र होने के कारण 'आत्म-समर्पण' ही एक रास्ता रह जाता है-अगर यह बात ठीक है कि कर्म करने के बाद इच्छित फल की आशा को छोड़ देना हमारे लिए लाज़मी है, हम चाहें-न-चाहें-फल हमारे हाथ की बात नहीं है, तब इसके सिवाय हमारे पास क्या रास्ता रह जाता है कि हम अपने-आप को उस शक्ति के हाथों सौंप दें जिसका काम 'कर्म' तथा 'फल'-इन दोनों को अंकगणित के अनुसार मिला देना है। यही मार्ग 'आत्म-समर्पण' का मार्ग है, इसी को कहते हैं-'मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूर्ण हो'। कर्म का रहस्य निष्काम कर्म है, और निष्काम कर्म का अर्थ कर्म करके फल को अपने ऊपर नहीं, उसके ऊपर छोड़ देना है-इसी का दूसरा नाम 'आत्म-समर्पण है। ■■

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट

24 सितम्बर 2018 को लाला दीवान चन्द का जन्मदिवस, आर्य समाज की यज्ञशाला में यज्ञ के माध्यम से मनाया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. टी.एन. चतुर्वेदी तथा ट्रस्ट के अन्य ट्रस्टी उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात् ट्रस्ट की ओर से 'अमृत पॉल शिुश शाला' के 500 बच्चों को पैक लंच दिया गया। तत्पश्चात् लाला दीवान चन्द ट्रस्ट की ओर से सोलर प्लांट जो ट्रस्ट ने सहातार्थ औषद्यालय में लगवाया था, उसका औपचारिक उद्घाटन डॉ. टी.एन. चतुर्वेदी जी के द्वारा हुआ। उसके बाद पुस्तकालय में आये अतिथियों को आर्य समाज की ओर से जलपान की व्यवस्था थी। ■■

नवम्बर 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
04	आचार्यधर्मेन्द्र शास्त्री (9999426474)	सुख और दुख क्यों?
11	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	ऋषि दयानन्द की भारत व विश्व को देन।
18	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	माण्डूक्य उपनिषद का सार।
25	डॉ. उमा, प्रो. सत्यवती कॉलेज (9968962885)	परिमितं वै भूतम्, अपरिमितं भव्यम् (व्यतीत सीमित है, भविष्य विस्तृत है) – ऐतरेय ब्राह्मण

अक्टूबर मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्री विनय सहगल	21,000/-	श्रीमती सुदेश चोपड़ा	10,000/-	श्री महेश आर्य	2,100/-
श्रीमती अमृत पॉल	11,000/-	M/s ज्वैलर्स एम. राजसन्स	9,000/-	श्री अनूप चड्ढा	2,000/-
श्री राजीव कुमार चौधरी	11,000/-	श्रीमती चन्द्रप्रभा खाण्डपुर	6,200/-	श्रीमती शारदा भाटिया	1,500/-
श्रीमती रक्षा पुरी	11,000/-	श्री ओम प्रकाश चड्ढा	5,100/-	श्री सुभाष चन्द अमर	1,100/-
श्रीमती उषा मरवाह	11,000/-	श्री आत्म प्रकाश रेलन	5,100/-	श्री सुख सागर ढिंगरा	1,100/-
श्रीमती सुधा गर्ग	11,000/-	श्री सुनील कुमार मेहता	5,100/-	श्रीमती सीता धवन	1,100/-
डॉ. विनोद कुमार मलिक	11,000/-	श्री विजय लखनपाल	5,000/-	श्री नरेन्द्र वाधवा	1,100/-
श्री अशोक चोपड़ा	11,000/-	श्रीमती सुदर्शन बजाज	5,000/-	श्रीमती निधि कपूर	1,100/-
श्री सुप्रणीत सक्सेना एवं श्री एस.सी. सक्सेना	11,000/-	श्री राज बहादुर जैन	5,000/-	श्री सत्या ढिंगरा	1,100/-
		श्रीमती सतीश सहाय	5,000/-	श्री एस.एल. आनन्द	1,100/-
M/s परमेश्वर दास एण्ड सन्स बिल्डर्स प्रा. लि. - श्री अरुण बहल	11,000/-	श्री विजय कुमार भाटिया	5,000/-	श्रीमती सावित्री तात्या	1,100/-
		श्री अमर सिंह पहल	5,000/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
		श्री हरदीप कपूर	3,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्रीमती वीना कश्यप	11,000/-	श्री दयानन्द मनचन्दा	3,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	11,000/-	श्री प्रताप गुलियानी	3,100/-	श्रीमती रमा चोपड़ा	1,000/-
सुश्री आदर्श भसीन	11,000/-	श्री कमलेश वोहरा	2,200/-	श्री के.के. कॉल एवं परिवार	700/-
श्रीमती वनिता कपूर	10,000/-	श्रीमती प्रेम शर्मा	2,100/-	श्री जतिन कंडा	500/-

अक्टूबर माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 2,250/- ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 2,000/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ श्री देवेन्द्र कुमार मग्गू ₹ 50,000/- ❖ श्रीमती पुष्पा मग्गू ₹ 50,000/-

❖ श्रीमती खरबन्दा ₹ 11,000/- ❖ श्री सतीश छतवाल ₹ 10,000/-

अन्य दान: ❖ श्री मोहित 24 Eye-Drops

❖ सुश्री आदर्श चुघ 1 Wheel Chair with Pot

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट जन्मदिवस - झलकियाँ

(सोमवार, 24 सितम्बर 2018)